डॉक्टर पांडुरंग सदाशिव खानखोजे की आवक्ष प्रतिमा के अनावरण के अवसर पर माननीय लोक सभा अध्यक्ष का संबोधन

- मेक्सिको की पवित्र धरती पर भारत के एक महान सपूत डॉ. पांडुरंग सदाशिव खानखोजे जी की मूर्ति के अनावरण कार्यक्रम में सम्मिलित होकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।
- साथियों, लोकसभा अध्यक्ष के रूप में संसदीय शिष्टमंडल के साथ मेरी यह पहली मेक्सिको यात्रा है। इस कार्यक्रम के ठीक पहले मैंने मेक्सिको के चापिंगो विश्वविद्यालय के कैंपस का भ्रमण किया था।
- यह विश्वविद्यालय कृषि विश्वविद्यालय है और मेक्सिको के कृषि सेक्टर में विकास के लिए तथा किसानों की समृद्धि के लिए उत्कृष्ट काम कर रहा है।
- साथियों, डॉ. पांडुरंग खानखोजे एक महान भारतीय क्रांतिकारी, विद्वान, कृषि, वैज्ञानिक और विजनरी व्यक्ति थे।
- इनका जन्म तो महाराष्ट्र में हुआ था लेकिन आरंभ से ही उनकी एक वैश्विक सोच थी। उनका मानना था कि विदेशी शासन को समाप्त करने के लिए शिक्षा एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण अत्यंत आवश्यक है। वे

जानते थे कि भारत एक कृषि प्रधान देश है यहां की पूरी अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है।

- कृषि हमारे देश के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह मात्र एक व्यवसाय नहीं है बल्कि हमारी जीवनशैली का एक भाग है। हमारे पर्व त्योहार कृषि से बहुत निकटता से जुड़े हैं। डॉ. पांडुरंग खानखोजे जानते थे कि देश का विकास कृषि के विकास के ही माध्यम से हो सकता है।
- अपनी इसी विचारधारा के कारण वे भारत से अमेरिका गए जहां उन्होंने कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में कृषि विज्ञान का अध्ययन किया तथा कृषि अनुसंधान में डॉक्टरेट की उपाधि पाई।
- डॉ. खानखोजे मात्र एक वैज्ञानिक नहीं थे बल्कि उनके हृदय में भारत को स्वतंत्र कराने के लिए एक क्रांतिकारी विचारधारा का भी स्थान था। इसी कारण जब उन्होंने दक्षिण अमेरिका के कई देशों में स्वतंत्रता संग्राम के बारे में सुना तो वह अपने आप को वहां जाने से रोक नहीं पाए।
- इसी प्रकार उनका मेक्सिको आगमन हुआ जहां उन्होंने सैनिक शिक्षा भी प्राप्त की। विदेशों में रहते हुए भी अपने देश की स्वतंत्रता के लिए इतना उत्साह, इतनी कर्मठता, इतनी कर्मधर्मिता किसी सामान्य मनुष्य का नहीं हो सकता। वे वास्तव में एक असाधारण व्यक्ति थे।

- उन्होंने अमेरिका में रहते हुए भी गदर आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। वे गदर आंदोलन के नेताओं के साथ निरंतर संपर्क में रहे। इस आंदोलन की सफलता के लिए उन्होंने अथक प्रयास किए थे।
- मेक्सिको में आने के बाद उन्होंने अपनी कृषि वैज्ञानिक की पृष्ठभूमि का उपयोग किया और यहां क्रांतिकारी विचारों के प्रसारण के साथ-साथ वह कृषि कार्य में भी लग गए। वास्तव में कृषि कार्य उनके मन के नजदीक था उसे इसीलिए बाद में उन्होंने इसी चापींगों में कृषि के प्रोफेसर के पद पर काम किया। यहाँ उन्होंने अधिक उत्पादकता देने वाले फसलों के विकास पर काम किया तथा उस प्रकार के बीज तैयार किए जो वहां की जलवायु के लिए अधिक अनुकूल हो।
- निश्चित रूप से उनका मेक्सिको की हरित क्रांति में बहुत बड़ा योगदान रहा था। भारत के वैज्ञानिकों ने भी उनकी प्रयोगों एवं ज्ञान का उपयोग किया। इस प्रकार देखा जाए तो भारत की भी हरित क्रांति में डॉ. पांडुरंग खानखोजे जी का योगदान रहा।
- वर्ष 1947 में जब भारत अंततः स्वतंत्र हुआ तो वह वर्ष 1955 में भारत वापस आए और शांति पूर्वक अपने कार्य में लगे रहे।

- मेरे विचार में यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है कि डॉ. खानखोजे के कार्यों और उनके प्रेरक जीवन के बारे में अधिक जानकारी भारत में आज की वर्तमान पीढ़ी को संभवतः नहीं है।
- डॉ. खानखोजे की तरह ऐसे अनगिनत क्रांतिकारी हैं, विचारक हैं जिन्होंने समाज के कमजोर वर्गों, किसानों के उत्थान के लिए समर्पित होकर कार्य किया, जिनके कार्यों से जमीन पर सामाजिक बदलाव आया।
- हमारा प्रयास होना चाहिए कि ऐसे महान व्यक्तियों के जीवन के बारे में हम लोगों को शिक्षित करें, ताकि हमें राष्ट्रसेवा की प्रेरणा मिल सके।
- मैं डॉ. खानखोजे को अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि देता हूँ तथा इस विश्वविद्यालय को उनके भावी प्रकल्पों के लिए शुभकामनाएं देता हूँ। धन्यवाद।